

विनोदप्रिय बीरबल





Get More Visit : <http://hindicomics.blogspot.com>

दस महामूर्ख

बीरबल, बादशाह होने के नाते मेरा सिर्फ अकलमंद लोगों से मिलना होता है, मूर्खों से नहीं। मुझे शहर के दस महामूर्खों से मिलवाओ।

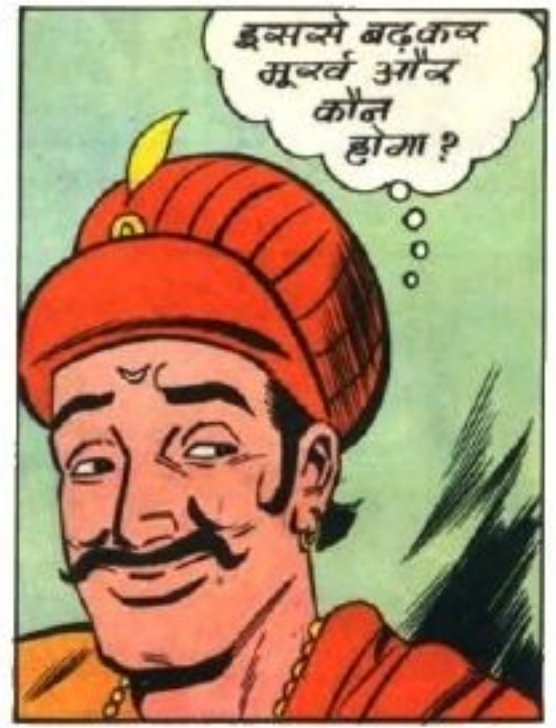
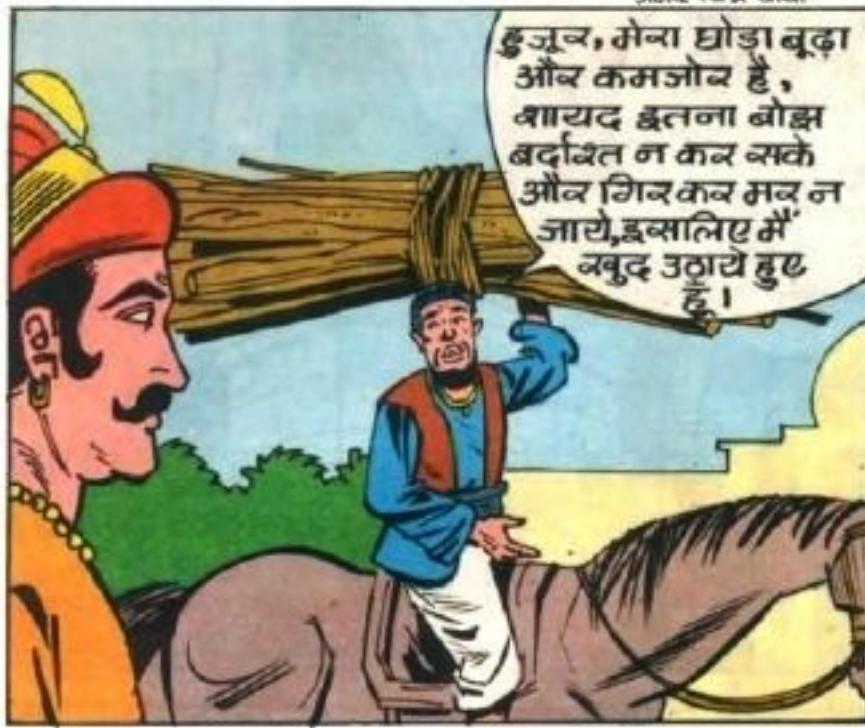
बादशाह अकबर अकसर बीरबल से अजीब-अजीब फरमाइशें किया करते थे, लेकिन यह फरमाइश सबसे निराली थी।

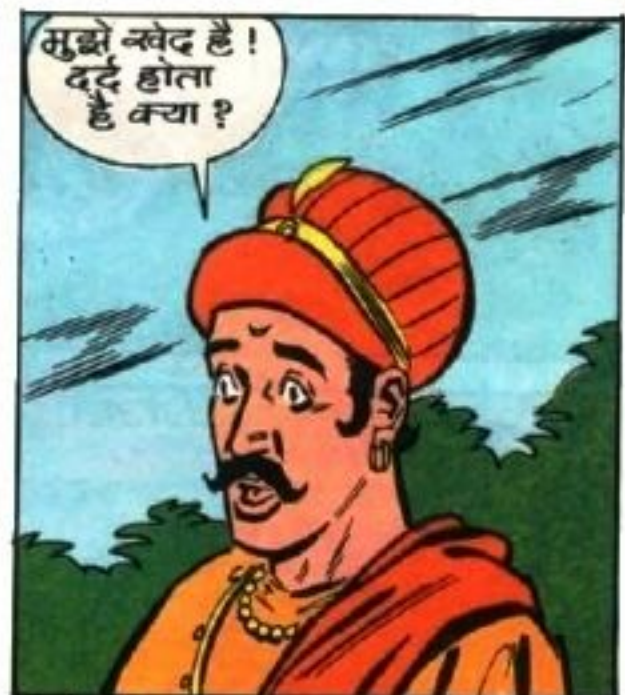
मैं इस काम के लिए तुम्हें एक महीने का वक्त देता हूँ।

कोई बड़ी बात नहीं है, जहाँ पनाह, शायद इतना वक्त न भी लगे।

और बीरबल जब मूर्खों की रोज में निकले, तो उन्होंने एक अजीब हृदय देखा।

छोड़े की पीठ पर लादने के बजाय, यह गट्टा तुम अपने सिर पर क्यों उठाये हुए हो ?



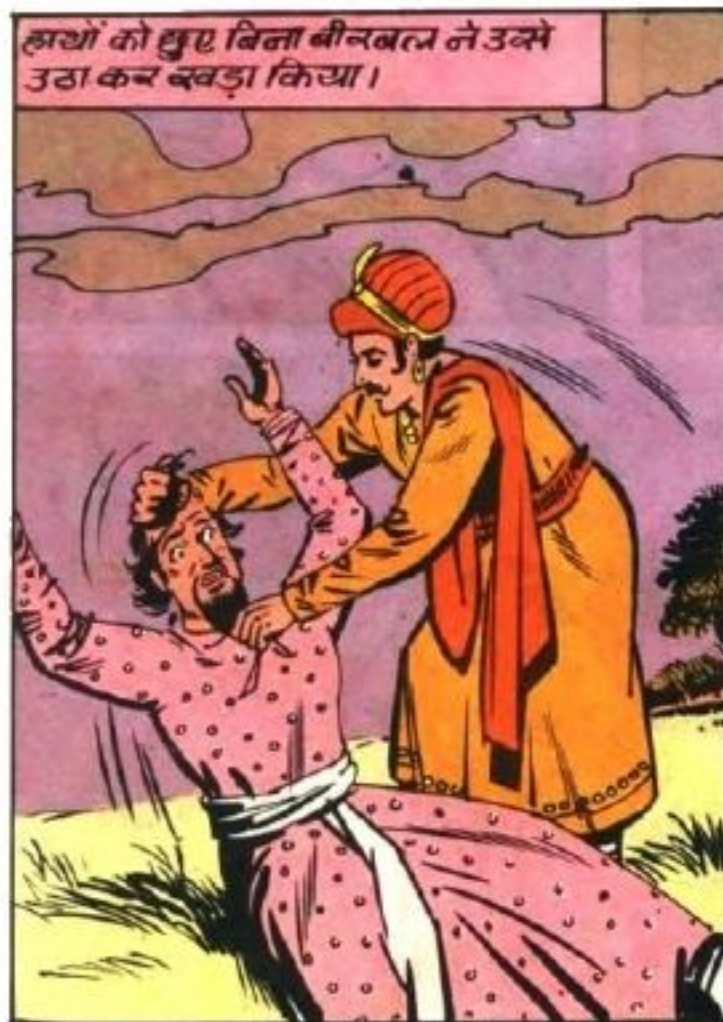


हाथ हिल जाने से
नाप में फर्क आ
जायेगा। और मेरी बीबी
ऐसी आफत की पुड़िया
है कि जिन्दगी भरताने
देती रहेगी।

पबले जिरे का
मूखल गता है!
इसे भी साथले
चलना चाहिए!

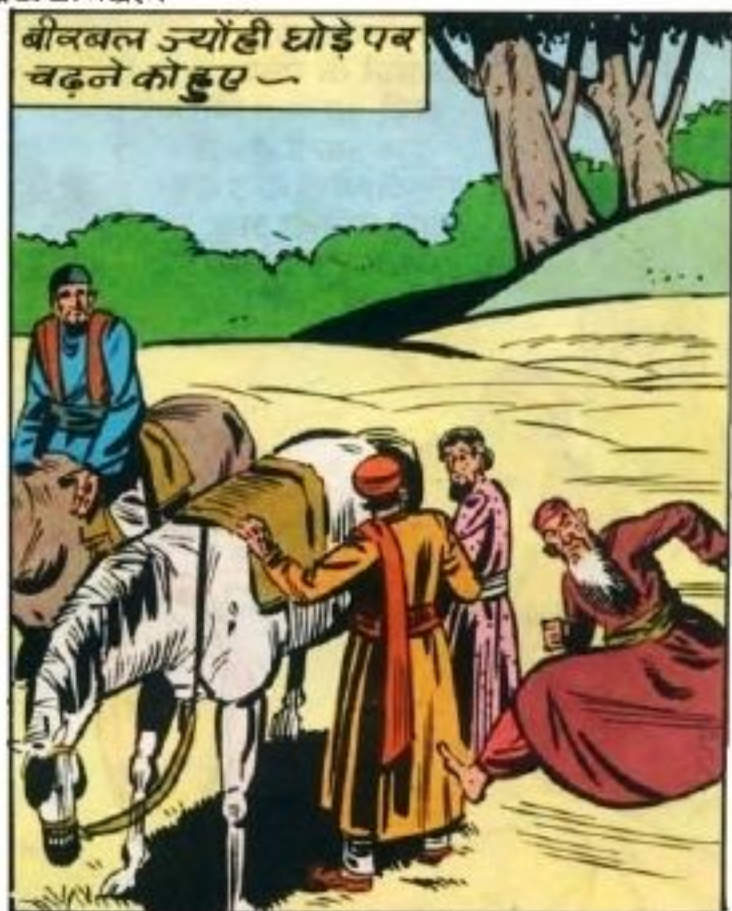


हाथों को छुए बिना बीनबल ने उसे
उठा कर खड़ा किया।

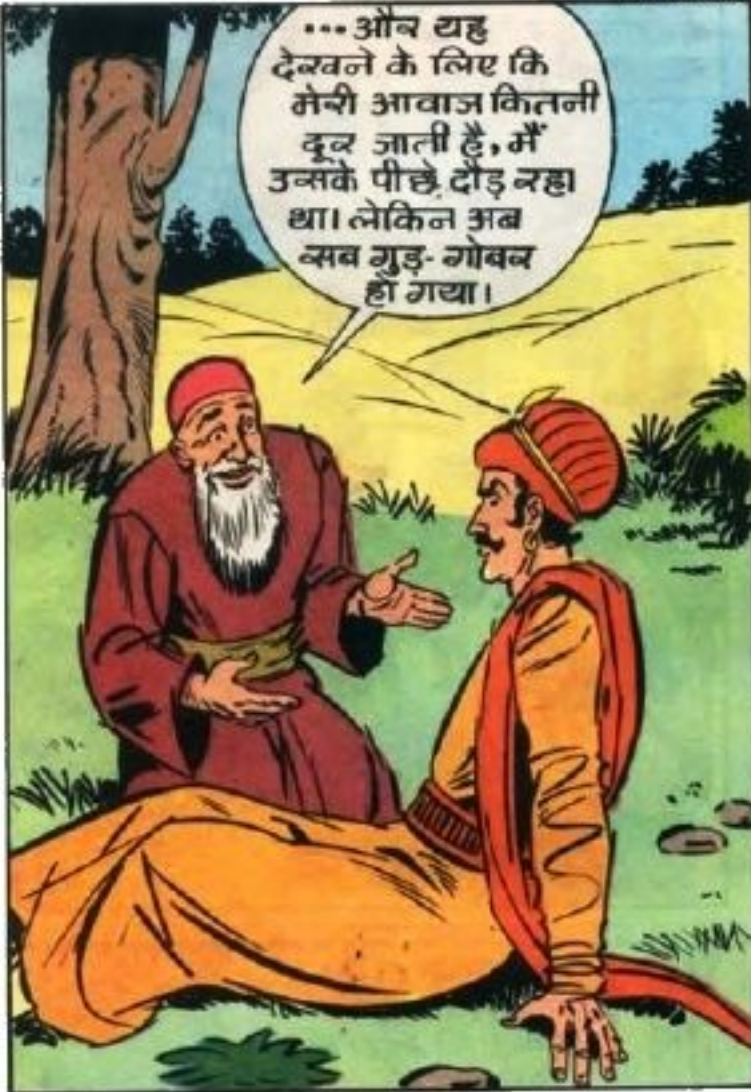


हाथ नीचे कर
लो। मेरे साथ
चलो, तुम्हें छोटे-से
छोटे और बड़े-से
बड़े हर नाप के
बर्तना का खूब
सूरत सेट
दिलुवा
दूंगा।



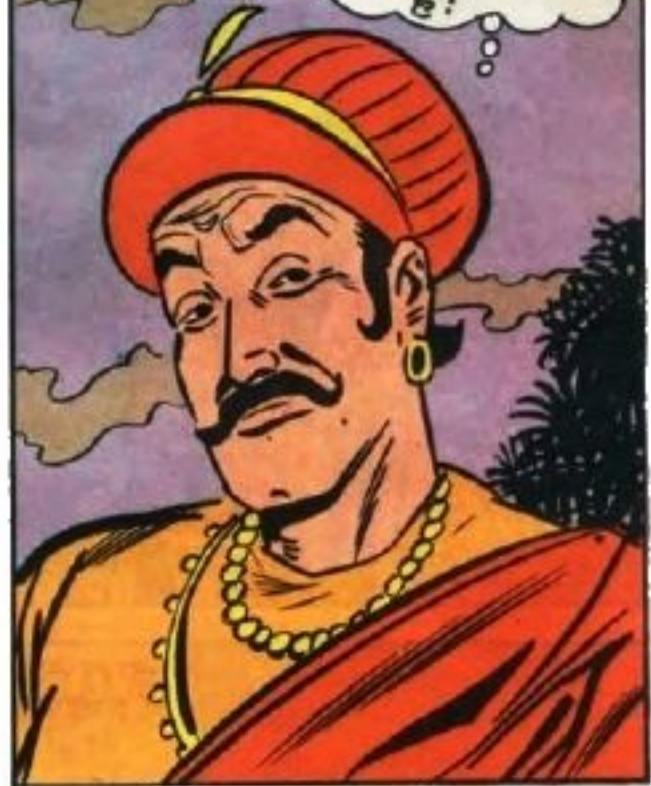


...और यह देखने के लिए कि मेरी आवाज कितनी दूर जाती है, मैं उसके पीछे दौड़ रहा था। लेकिन अब सब गुड़-गोबर हो गया।



थोड़ी देर तक हक्का-बक्का बीरबल उस मौलवी को देखते रहे।

मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि हमारे आह्व में ऐसा भी मुख्य मौजूद है!



गोली मारो आवाज को। फिर कभी कोशिश कबना। अभी मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें दो सोने की मुहरें दूंगा।







मैं तो कब के
रहूंगा !

तेरी यह
हिम्मत ! मैं भी
देख लूंगा !

मूर्खों, बंद करो
बकवास !
बंद करो !

हुजूर !



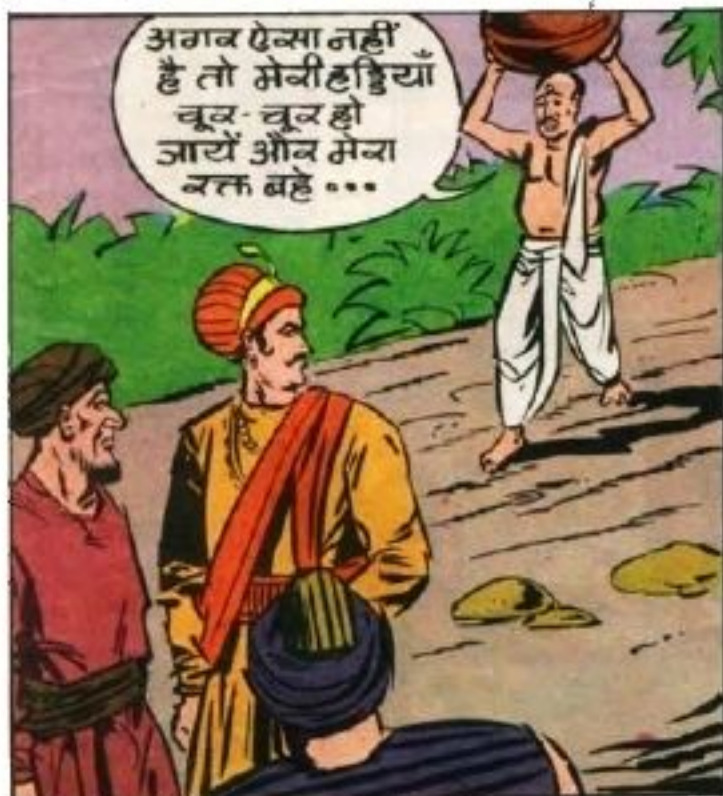
कुछ देर बाद बीबल का मन शांत हुआ ।

क्या हो
रहा है
मुझे ?

आप भी
कितने भोले हैं,
हुजूर, कि इन मूर्खों
की बातों को
गंभीरता से ले
रहे हैं !



अगर ऐसा नहीं
है तो मेरी हड्डियाँ
चूर-चूर हो
जायें और मेरा
रक्त बहे ...



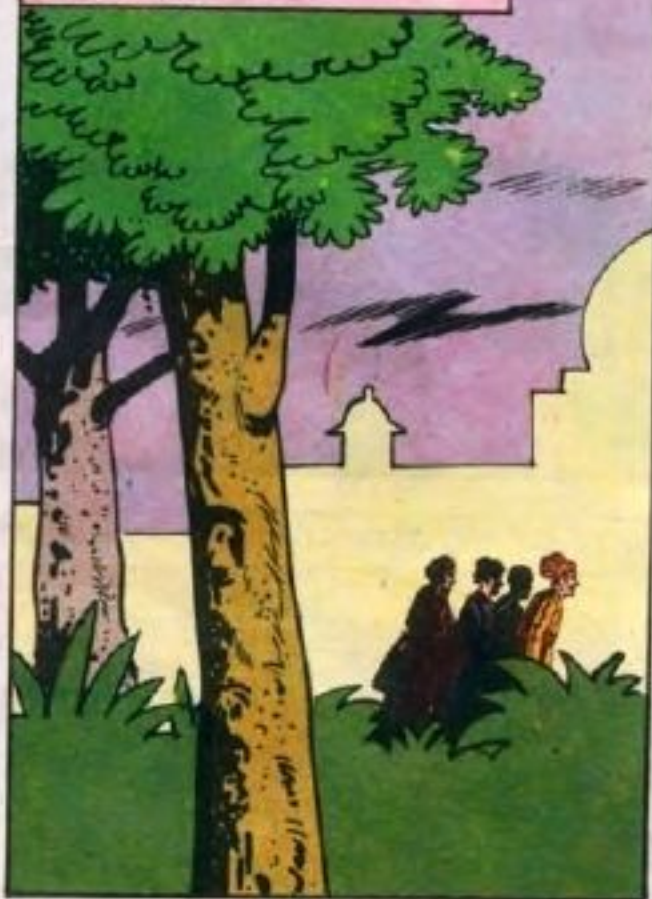
... इस
तेल की
तरह !



हाय! यह मैंने
क्या किया? अच्छे-
भले छोड़े और
शुद्ध तेज का
सत्यानाश!



बगैर कुछ कहे बीरबल ने
उन तीनों को महल में
ले जा कर...



...अन्य तीन मूर्तों के पास छोड़ दिया।



UPLOADED BY ASHISH PATHAK

अंधेरा हो चला था, दिन के अनुभवों ने बीरबल को काफी थका दिया था।

बाहर थोड़ी ताजा हवा मिलेगी। बाकी मुखर्वों की खोज कल करूँगा।

कुछ घंटों बाद तबोताजा होकर बीरबल, महल को लौट रहे थे —

क्या सुंदर चाँद है, हजारों दीये भी रातने को इस जैसी रोशनी नहीं दे सकते !







क्यों नहीं, हुजूर !
मैं कोई मुर्ख थोड़े
हूँ। जहाँ मैंने अँगूठी
छिपायी थी, ठीक
उसके ऊपर बदली
मौजूद थी।



अब वह कसबकस्त
बदली गायब है, साथ
ही मेरी अँगूठी।

हुजूर, इसका कहना
सही है। इसे क्या पता
था कि बदली इसे
इस बुरी तरह
धोखा दे
जायेगी !



बदली की परवाह
मत करो, मेरे
साथ चलो। दूसरी
अँगूठी दिलवा
दूँगा।

सच,
हुजूर !



बिल्कुल सच !
ऐसा बहुमदिल
आदमी मुझिल
से दूँदे मिलेगा।



महल में वापस आ कर -



आठ तो हो गये।
कसब नौवें और
दसवें की है...
क्यों?

दूसरे दिन बीरबल मूर्खों के साथ
दरबार में हाजिर हुए।



इतनी
जल्दी
आ गये,
बीरबल?

ताज्जुब की
बात नहीं है, जहाँ-
पनाह, सभी जानते
हैं कि अक्लमंदों के
मुकाबले मूर्ख आसानी
से मिल जाते
हैं।

और बीरबल ने हर मूर्ख के साथ जो उनका
पाला पड़ा उसकी बादशाह को जानकारी दी।

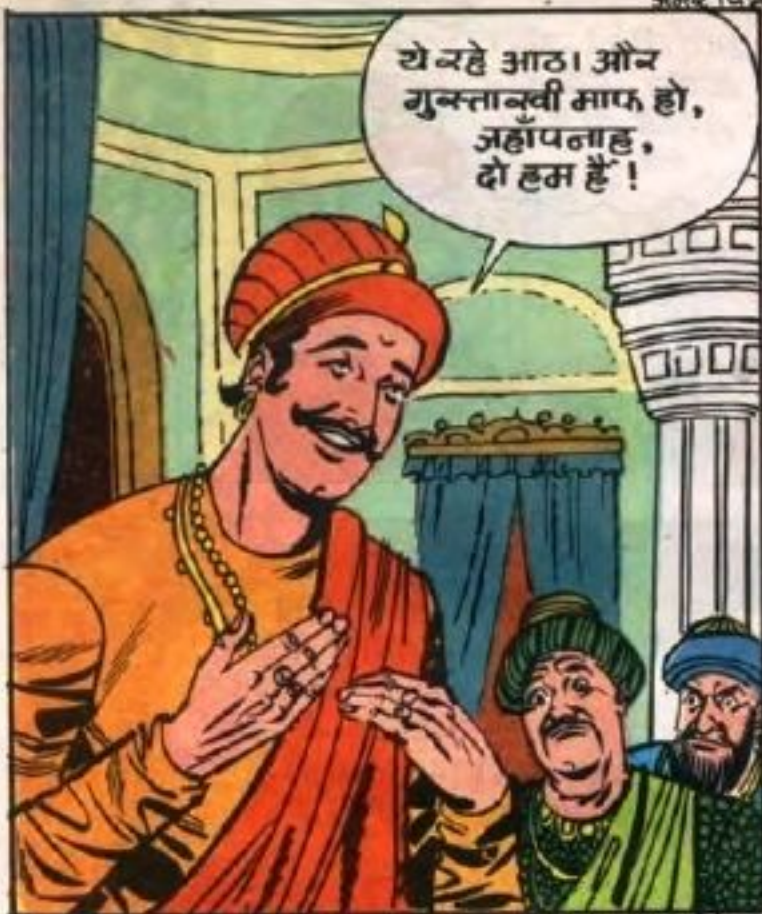


लेकिन ये तो आठ मूर्ख
हैं। मुझे अच्छी तरह
खयाल है मैंने
दस के लिए
कहा था।

माफ़ कीजिएगा,
जहाँपनाह, दस
पूरे हैं।



UPLOADED BY ASHISH PATHAK



आचार्य के कौवे

एक दिन अकबर के दरबारी उनके पास शिकायत लेकर आये।

जहाँपनाह,
जब कोई समस्या आती है, तो आप
सिर्फ बीरबल से
ही क्यों समाधान
करवाते हैं।

क्योंकि हर
बात का उनके पास
जवाब है और
हर समस्या
का हल।

हम भी तो हैं, लेकिन
आप हमें कभी
मौका नहीं देते।

तो, बीरबल भी
आ गये। अच्छा,
आज मैं आप
सबको
मौका दूंगा।

बीरबल के आने के साथ ही अकबर ने आकाश की ओर ताका।

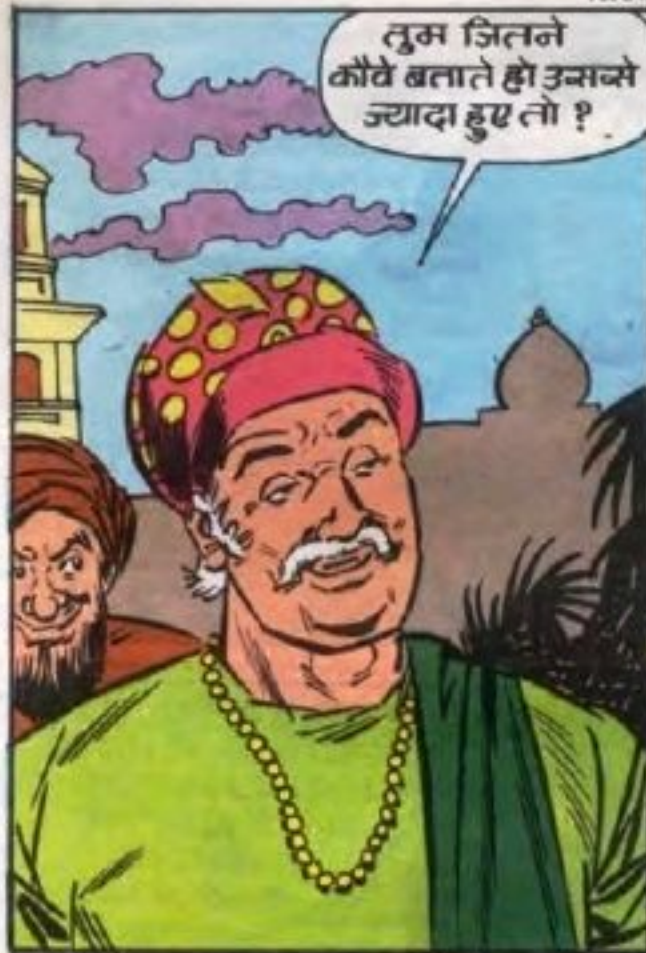


दरबारी पवेशान-से एक-दूसरे को देखने लगे।



बीरबल के जवाब से बादशाह को भी आश्चर्य हुआ।





बीरबल और फारस के शाह

बीरबल के विनोदी स्वभाव और बुद्धिमत्ता की ख्याति सुदूर फारस के शाह के कानों तक पहुँची।

अपने दरबार में बुला कर आजमाना चाहिए कि जैसी उसकी ख्याति है, क्या वाकई मैं वही वैसा ही हूँ।

कुछ महीने बाद, बीरबल फारस की राजधानी पहुँचे।

हुजूर, तशरीफ लाइए, हमारे शाह की बंदगी के लिए। वे आपसे मिलने को बड़े मुंतजिब हैं। आपको उनके पास ले चलता हूँ।

शाह के दरबार में पहुँचकर बीरबल को विचित्र दृश्य देखने को मिला।

क्या किया जाय ? इससे पहले उन्होंने शाह को कभी देखा नहीं था। सामने मौजूद सभी एक जैसे व्यक्ति, एक जैसी पोशाक पहने, एक जैसे सिंहासन पर बैठे थे।

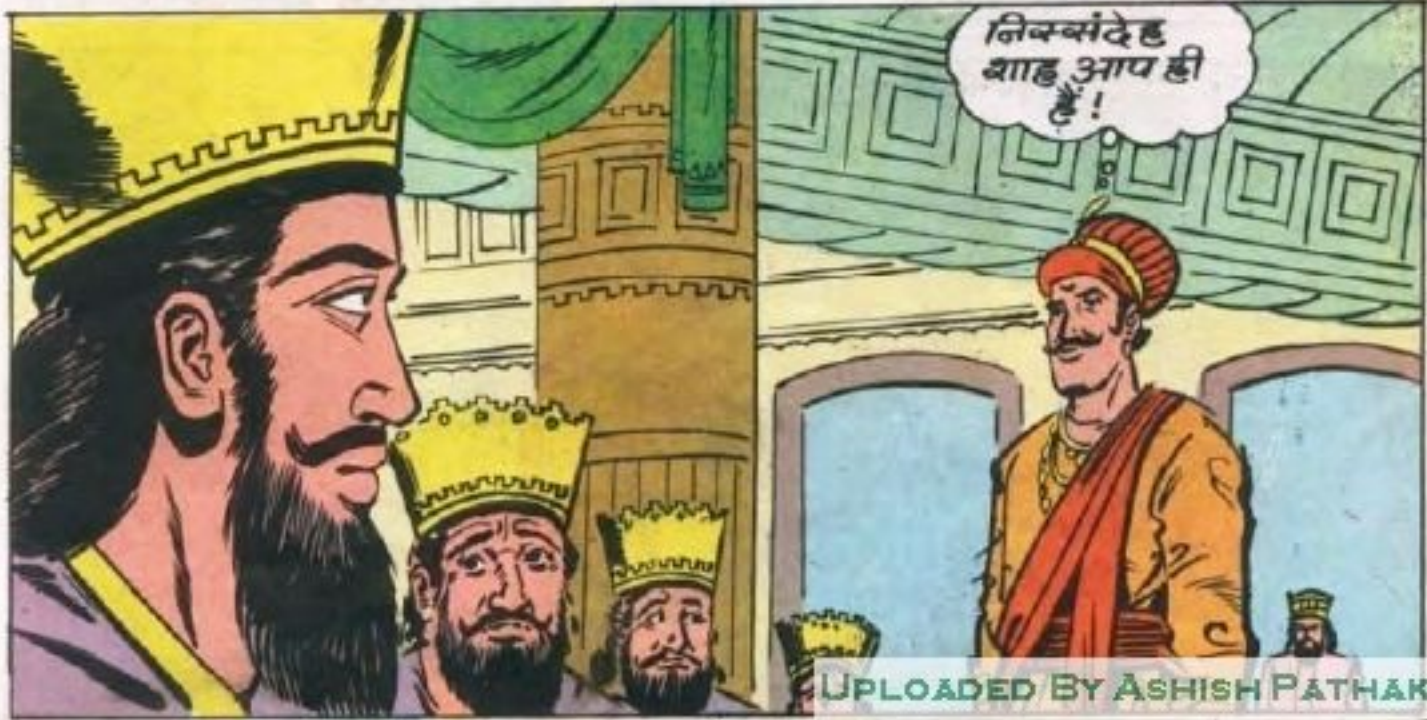
इनमें से शाह कौन हैं ?



क्षणभर के लिए बीरबल ने निश्चय स्वड़े रह कर सिंहासनों की कतार पर अपनी नजर दौड़ायी।



निश्चय देह शाह आप ही हैं !



हमारे बादशाह ने आपके प्रति सम्मान प्रकट किया है और मेरे साथ उपहार भेजे हैं, जिन्हें खजाने में पहुँचाया जा रहा है।



शाह को विस्मय हुआ।

बीरबल !
मुझे पहचाना कैसे ? इससे पहले कभी देखा तो था नहीं।



बड़ा आश्चर्य था। जब मैं चकित बड़ा था उस समय दूसरे सब आपकी प्रतिक्रिया जानने के लिए मुड़कर आपकी ओर देख रहे थे, जबकि आपकी नजर बिलकुल सामने थी।



बीरबल की निरीक्षण शक्ति से शाह बड़े प्रभावित हुए।

वाकई, तुमसे बढ़कर बुद्धिमान व्यक्ति से शायद ही कभी मिलना हुआ हो।



आज से तुम्हें 'बुद्धिदामागर' कह कर पुकारा जायेगा।



हिंदुस्तान के लिए खाना होने से पहले बीरबल को शाह ने भवपूर्ण धन-संपत्ति भेंट की।

मोहर

अकबर की आदत थी भेष बदलकर शहर में घूमने फिरने की। यह बात बीनबल को पसंद न थी। उनके खयाल से इसमें खतरे का अंदेशा था।



अच्छा, बीनबल, मैं चला।

मेरी अब भी यही अर्ज है, जहाँपनाह, कि आप यह आदत छोड़ दें। बादशाह की जिंदगी बेधाकीमती है। उसकी हिफाजत जरूरी है।



बाद में जब अकबर सड़क पर जा रहे थे—

लगता है कोई पीछा कर रहा है।



वे रुके, फिर घूम कर देखा।

अच्छा, वह भी
रुक कर दूकान में
देखने को बहाना
कर रहा है!
पास जाकर
पूछता
हूँ।

क्या
नाम है,
तुम्हारा?

घुमकड़!

जिंदगी बख़्श
के लिए क्या
करते
हो?

घुमता-
फिरता हूँ।

रहते कहाँ
हो?

हर जगह।

इन उत्तरों से अकबर इस कदर चिढ़ गये कि खुद को भूल गये।

पता है मैं कौन हूँ ?

एक इन्सान, किसी के भी जैसा।



मैं बादशाह हूँ। अगर तुम्हें भरोसा नहीं है, तो यह वही मेरी मोहर।

देखूँ जरा।



उस अजनबी ने मोहर की अँगूठी अपने कमरबंद में रख ली।



अब जब वह शकस
भागने लगा तो
अकबर को अहसास
हुआ कि कैसी भूल
कर दी।

चोव! चोव!
पकड़ो!
पकड़ो!



भीड़ चोव के
पीछे भागी।

जाने न
पाये।



जब लोगों ने उसे पकड़ा—

बेवकूफो, मुझे नहीं
जानते? मैं
बादशाह हूँ।



अगर मेरे कहने
पर एतबाव नहीं,
इसपर तो यकीन
है।

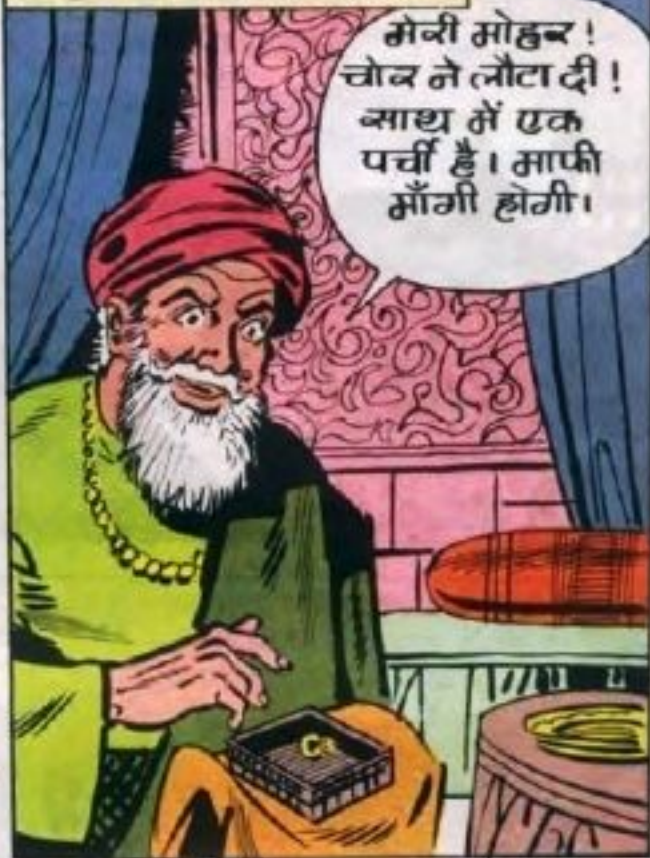




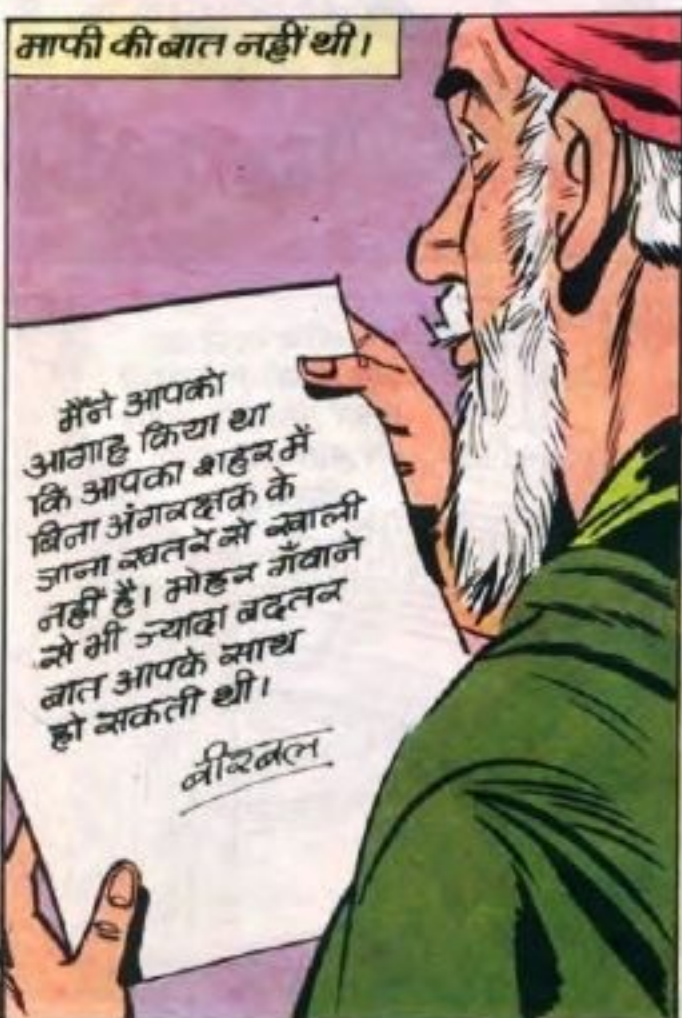
इन्हीं विचारों में खोये जब अकबर
अपने कक्ष में पहुँचे -



उन्होंने गठरी खोली।



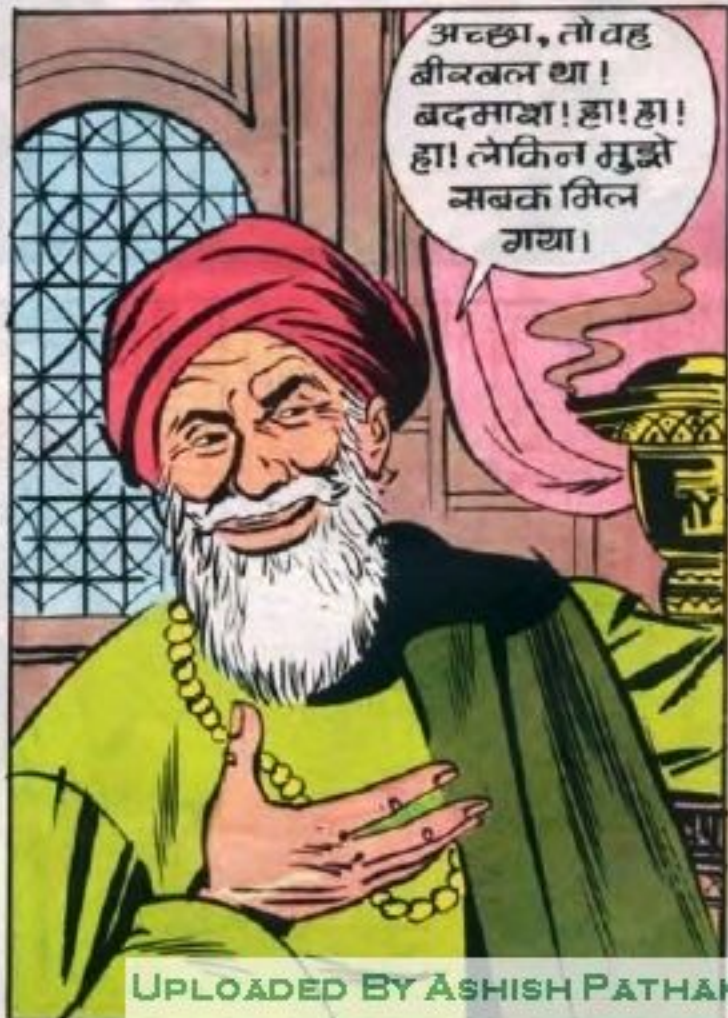
माफी की बात नहीं थी।



मैंने आपको
आगाह किया था
कि आपका शहर में
बिना अंगरक्षक के
जाना खतरा से खाली
नहीं है। मोहर गँवाने
से भी ज्यादा बदतर्ज
बात आपके साथ
हो सकती थी।

बीरबल

अच्छा, तो वह
बीरबल था!
बदमाश! हा! हा!
हा! लेकिन मुझे
सबक मिल
गया।



अकबर माछान



एक दिन भये दरबार में एक चापलूस ने अकबर की तारीफ करते हुए उन्हें दुनिया के मालिक खुदा से भी बड़कर बताया।



अकबर कई दिनों तक इसपर विचार करते रहे।

किस तरह मैं खुदा से भी बड़कर हूँ?



खुदा से इस सवाल का जवाब पाने में नाकामयाब रहने पर उन्होंने दरबारियों से पूछा।

तुम्हारे खयाल में क्या मैं खुदा से बड़कर हूँ? ऐसा है, तो कैसे?



क्या कहूँ?

उसीसे क्यों न पूछा जाय, जिसने कहा था?

इस सवाल का जवाब बादशाह को नाबाज किये बगैर या झूठ बोले बिना, कैसे दे सकता हूँ?

जब किसी भी व्यक्ति से
अकबर को जवाब न
मिला ...

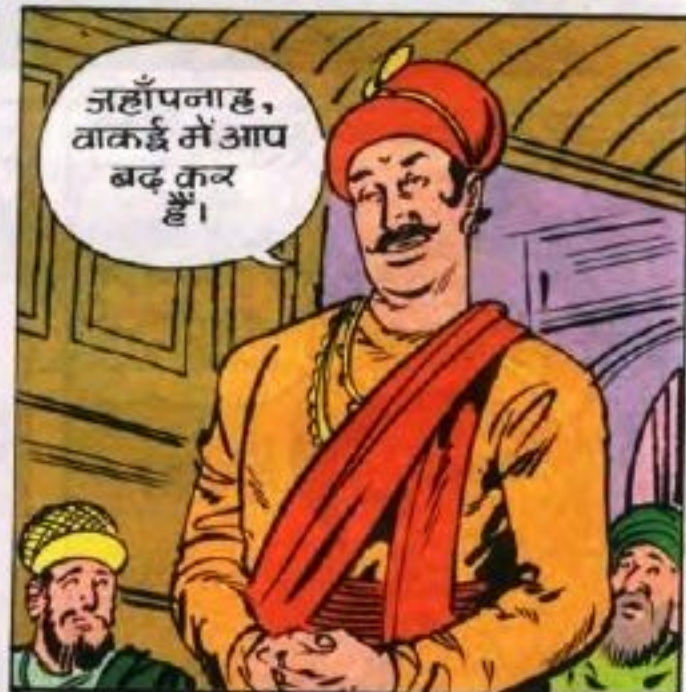


... उन्होंने बीरबल से पूछा।

बीरबल,
क्या तुम्हारे
खयाल में मैं
बुढ़ा से भी
बढ़कर हूँ ?
सच-सच
बताओ।



जहाँपनाह,
वाकई मैं आप
बढ़कर
हूँ।



बीरबल, तुम
चापलूसी तो नहीं
कर रहे हो ?

बिलकुल नहीं, जहाँपनाह,
चकीनन एक बात ऐसी है
जो आप कर सकते हैं;
बुढ़ा नहीं कर
सकता।



अगर आप
किसी को देशनिकाला
देना चाहें तो उसे
अपने राज्यसे
बाहर भेज
सकते हैं।



लेकिन दुनिया का
मालिक खुदा अगर
किसी को दुनिया से
बाहर कचना चाहे
तो कहाँ भेजे ?



क्या मैं
अपनी बात
साबित कर सका,
जहाँपनाह ?



अकबर मुस्कनाये।

बीरबल ! तुमने
जिस हेशियारी और
अक्लमंदीसे मेरी
आँखें खोल दीं उसके
लिए तुम्हारा
शुक्रगुजार हूँ।

